

## 10

## The Great Stone Face- II

## Honeydew

(English to Hindi Translation)

Before you read

पढ़ना आरंभ करने से पहले

Many years passed. Ernest was now a man of middle age. To his neighbours, who never suspected that he was anything more than an ordinary and familiar face, he was only a humble and hardworking, though thoughtful, person.

कई साल बीत गए। अर्नेस्ट अब मध्यम आयु का व्यक्ति था। अपने पड़ोसियों के लिए, जिन्होंने कभी संदेह नहीं किया था कि वह एक साधारण और परिचित चेहरे से अधिक कुछ भी नहीं था, वह केवल एक विनम्र और मेहनती, हालांकि विचारशील व्यक्ति था।

But what about the old prophecy? Was it ever fulfilled? Let us read and find out.

लेकिन पुरानी भविष्यवाणी के बारे में क्या? क्या यह कभी पूरी हुई? आइए पढ़ते हैं और पता करते हैं।

The years hurried on, and brought white hairs upon the head of Ernest, and made wrinkles across his forehead and furrows in his cheeks. He was an old man. But not in vain had he grown old; more numerous than the white hairs on his head were the wise thoughts in his mind. And Ernest had ceased to be obscure. Unsought for, undesired, had come the fame which so many seek. He had become famous beyond the limits of the valley. College professors, and even the active men of cities, came from far to see and converse with Ernest, and he received them with gentle sincerity, and spoke freely with them of whatever came uppermost, or lay deepest in his heart or their own. While they talked together, his face would brighten, unawares, and shine upon them, as with a mild evening light.

साल जल्दी-जल्दी बीतते गए, और अर्नेस्ट के सिर पर सफेद बाल आ गए, और उसके पूरे माथे पर झुर्रियां आ गईं और उसके गाल पिचक गए। वह एक बूढ़ा आदमी था। लेकिन व्यर्थ में वह बूढ़ा नहीं हो गया था; उसके सिर पर उगे सफेद बालों से कहीं अधिक उसके मन में बुद्धिमान विचार थे। और अर्नेस्ट अस्पष्ट होना बंद हो गया था। उसे बिन मांगी, अवांछित प्रसिद्धि मिली थी जिसकी अनेक व्यक्ति इच्छा करते हैं। वह घाटी की सीमाओं से बाहर प्रसिद्ध हो गया था। कॉलेज के प्रोफेसर, और यहां तक कि शहरों के सक्रिय पुरुष, अर्नेस्ट से मिलने और उस से बातचीत करने के लिए दूर से आते थे, और वह उनका भद्र निष्कपटता से स्वागत करता था और उनसे खुल कर बातचीत करता था, जो कुछ भी उसके या उन लोगों के अपने दिल में बाहर या गहराई में दबा होता था। जब वे एक साथ बात करते थे, तो उसका चेहरा चमकता, अनजान होता, और उन पर चमकता, जैसा कि एक हल्की शाम की रोशनी के साथ होता है।

While Ernest had been growing old, God had granted a new poet to this earth. He, too, was a native of the valley, but had spent the greater part of his life in distant cities, pouring out his sweet music everywhere. Neither was the Great Stone Face forgotten, for the poet had celebrated it in a poem. The songs of this poet found their way to Ernest. He read them after his customary toil, seated on the bench before his cottage door. As he read he lifted his eyes to the mountain.

जबकि अर्नेस्ट बूढ़ा हो रहा था, भगवान ने इस धरती के लिए एक नया कवि दिया था। वह भी घाटी का एक निवासी था, लेकिन अपने जीवन का बड़ा हिस्सा दूर शहरों में हर जगह अपने मीठे संगीत को बिखेरते हुए बिताया था। न ही महान शिला मुख को भूल पाया था, क्योंकि कवि ने इसका एक कविता में वर्णन किया था। इस कवि के गीत अर्नेस्ट तक पहुंचे। उसने उन्हें अपने प्रथागत परिश्रम के बाद, अपनी झोपड़ी के दरवाजे के सामने बेंच पर बैठकर पढ़ा। जब उसने पढ़ा, उसने पहाड़ की ओर देखा।

## 10

## The Great Stone Face- II

## Honeydew

(English to Hindi Translation)

"O Great Stone Face," he said, "is not this man worthy to be your likeness?"

The face seemed to smile, but did not answer.

उसने कहा, "हे महान शिला मुख," "क्या यह आदमी आपकी समानता के योग्य नहीं है?"

चेहरा मुस्कुराता हुआ लगा, लेकिन जवाब नहीं दिया।

Now it happened that the poet, though he lived so far away, had not only heard of Ernest but had thought much about his character and wished to meet this man whose wisdom walked hand in hand with the noble simplicity of his life. One summer day, therefore, he arrived at Ernest's door, where he found the good old man holding a book in his hand, which he read and, then, with a finger between the leaves, looked lovingly at the Great Stone Face.

अब ऐसा हुआ कि कवि, हालांकि वह बहुत दूर रहता था, ने न केवल अर्नेस्ट के बारे में सुना था, बल्कि उसके चरित्र के बारे में बहुत सोचा था और इस आदमी से मिलने की कामना की जिसका ज्ञान उसके जीवन की प्रभावशाली सादगी के साथ-साथ बढ़ा था। इसलिए, एक गर्मी के दिन वह अर्नेस्ट के दरवाजे पर पहुंचा, जहां उसने भले वृद्ध मनुष्य को अपने हाथ में एक किताब पकड़े हुए पाया, जिसे उसने पढ़ा और, फिर, पृष्ठों के बीच एक उंगली के साथ, महान शिला मुख की ओर प्यार से देखा।

"Good evening," said the poet. "Can you give a traveller a night's shelter?"

"Gladly," answered Ernest; and then he added, smiling, "I think I never saw the Great Stone Face look so hospitably at a stranger."

कवि ने कहा, "नमस्कार।" "क्या आप एक यात्री को एक रात का आश्रय दे सकते हैं?"

अर्नेस्ट ने जवाब दिया, "खुशी से,"; और फिर उसने मुस्कुराते हुए कहा, "मुझे लगता है कि मैंने महान शिला मुख को एक अजनबी की ओर इतनी मेहमाननवाजी से देखते हुए कभी नहीं देखा।

The poet sat down beside him, and he and Ernest talked together. Never before had the poet talked with a man like Ernest, so wise, and gentle, and kind. Ernest, on the other hand, was moved by the living images flung out of the poet's mind.

कवि उसके बगल में बैठ गया, और उसने तथा अर्नेस्ट ने साथ में बात की। कवि ने पहले कभी अर्नेस्ट जैसे व्यक्ति के साथ बात नहीं की थी, इतना बुद्धिमान, और भला, और दयालु। दूसरी ओर, अर्नेस्ट कवि के मन से बाहर आने वाली जीवित छवियों द्वारा मुग्ध था।

As Ernest listened to the poet, he imagined that the Great Stone Face was bending forward to listen too. He gazed into the poet's eyes.

जैसे ही अर्नेस्ट ने कवि की बात सुनी, उसने कल्पना की कि महान शिला मुख भी सुनने के लिए आगे झुक रहा था। उसने कवि की आंखों में टकटकी लगाकर देखा।

## 10

## The Great Stone Face- II

## Honeydew

(English to Hindi Translation)

"Who are you, my gifted guest?" he asked.

The poet laid his finger on the book that Ernest had been reading.

"You have read these poems," said he. "You know me, then, for I wrote them."

उन्होंने पूछा, "तुम कौन हो, मेरे प्रतिभाशाली मेहमान?"

कवि ने अर्नेस्ट की किताब पर अपनी उंगली रखी जिसे वह पढ़ रहा था।

उसने कहा, "आपने ये कविताएं पढ़ी हैं।" "तो आप मुझे जानते हैं, क्योंकि मैंने इन्हें लिखा था।"

"Who are you, my gifted guest?" he asked.

The poet laid his finger on the book that Ernest had been reading.

"You have read these poems," said he. "You know me, then, for I wrote them."

उन्होंने पूछा, "तुम कौन हो, मेरे प्रतिभाशाली मेहमान?"

कवि ने अर्नेस्ट की किताब पर अपनी उंगली रखी जिसे वह पढ़ रहा था।

उसने कहा, "आपने ये कविताएं पढ़ी हैं।" "तो आप मुझे जानते हैं, क्योंकि मैंने इन्हें लिखा था।"

Again and again, Ernest examined the poet's features; he turned towards the Great Stone Face then back. He shook his head and sighed.

अर्नेस्ट ने बार-बार कवि की विशेषताओं की जांच की; वह महान शिला मुख की ओर मुड़ा, फिर वापस मुड़ गया। उसने अपना सिर हिलाकर गहरी सांस ली।

"Why are you sad?" inquired the poet.

"Because," replied Ernest, "all through life I have awaited the fulfillment of a prophecy, and when I read these poems, I hoped that it might be fulfilled in you."

"You hoped," answered the poet, faintly smiling, "to find in me the likeness of the Great Stone Face. I am not worthy to be its likeness."

कवि ने पूछा, "तुम उदास क्यों हो?"

अर्नेस्ट ने जवाब दिया, "क्योंकि," "संपूर्ण जीवन में मैंने एक भविष्यवाणी के पूरा होने का इंतजार किया है, और जब मैंने इन कविताओं को पढ़ा, मुझे आशा जगी कि यह आप में पूरी हो सकती है।"

कवि ने हल्के से मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "तुमने आशा व्यक्त की," "मुझमें महान शिला मुख की समानता पाने के लिए। मैं इसकी समानता के योग्य नहीं हूँ।"



## 10

## The Great Stone Face- II

## Honeydew

(English to Hindi Translation)

"And why not?" asked Ernest. He pointed to the book. "Are not those thoughts worthy?"

"You can hear in them the distant voice of a heavenly song. But my life, dear Ernest, has not corresponded with my thoughts. I have had grand dreams, but they have been only dreams. Sometimes I lack faith in my own thoughts. Why, then, pure seeker of the good and true, should you hope to find me in the face of the mountain?"

अर्नेस्ट ने पूछा, "और क्यों नहीं?" उन्होंने किताब की ओर इशारा किया। "क्या वे विचार योग्य नहीं हैं?"

"आप उन में एक दैवीय गीत की दूर की आवाज सुन सकते हैं। लेकिन प्रिय अर्नेस्ट, मेरा जीवन, मेरे विचारों के साथ मेल नहीं खाता है। मैंने भव्य सपने देखे थे, लेकिन वे सिर्फ सपने ही रहे हैं। कई बार मुझे अपने ही विचारों पर विश्वास नहीं रहता। तब, क्यों, अच्छाई और सच्चाई के शुद्ध जिज्ञासु होकर तुम, पहाड़ के चेहरे में मुझे तलाशने की आशा रखते हो?"

The poet spoke sadly and his eyes were wet with tears. So, too, were those of Ernest.

At the hour of sunset, as had long been his custom, Ernest was to speak to a group of neighbours in the open air. Together he and the poet went to the meeting place, arm in arm. From there could be seen the Great Stone Face.

कवि ने दुखी होकर कहा और उसकी आंखें आंसुओं से गीली हो गईं। इसी तरह अर्नेस्ट की भी हो गई थीं।

सूर्यास्त के समय, जैसा कि लंबे समय से उसका रिवाज रहा था, अर्नेस्ट को खुले स्थान पर पड़ोसियों के एक समूह से बात करनी थी। वह और कवि एक साथ हाथ में हाथ डालकर बैठक की जगह पर गए। वहां से महान शिला मुख को देखा जा सकता था।

Ernest threw a look of familiar kindness around upon his audience. He began to speak to the people what was in his heart and mind. His words had power, because they agreed with his thoughts; and his thoughts had reality and depth, because they harmonised with the life which he had always lived. It was not mere breath that the preacher uttered; they were the words of life. A life of good deeds and selfless love was melted into them. The poet, as he listened, felt that the life and character of Ernest were a nobler strain of poetry than he had ever written. His eyes filled with tears and he said to himself that never was there so worthy a sage as that mild, sweet, thoughtful face, with the glory of white hair diffused about it.

अर्नेस्ट ने चारों ओर अपने दर्शकों पर परिचित दयालुता के साथ देखा। उसने लोगों से वह कहना आरंभ किया जो उसके दिल और दिमाग में था। उसके शब्दों में शक्ति थी, क्योंकि वे उसके विचारों से सहमत थे; और उसके विचारों में वास्तविकता और गहराई थी, क्योंकि वे उस जीवन के साथ सुमेलित हुए जो उसने हमेशा व्यतीत किया था। यह केवल सांस नहीं थी जो उपदेशक ने बोला; वे जीवन के शब्द थे। अच्छे कर्मों और निस्वार्थ प्रेम वाला जीवन उनमें घुल गया था। कवि ने जैसे ही सुना, उसे लगा कि अर्नेस्ट का जीवन और चरित्र कविता का एक महान प्रयास था जिसे उसने कभी नहीं लिखा था। उसकी आंखें आंसुओं से भर गईं और उसने खुद से कहा कि वैसा हल्के, मीठे, विचारशील चेहरे वाला, जिसमें सफेद बालों की महिमा घुली हुई थी, जैसा एक योग्य बुद्धिमान व्यक्ति कभी नहीं था।

At a distance, but clearly to be seen, high up in the golden light of the setting sun, appeared the Great Stone Face, with white mists around it, like the white hairs around the brow of Ernest. At that moment, Ernest's face took on an expression so

## 10

## The Great Stone Face- II

Honeydew

(English to Hindi Translation)

grand that the poet was moved to throw his arms up and shout. "Behold! Behold! Ernest is himself the likeness of the Great Stone Face!"

कुछ दूरी पर, लेकिन स्पष्ट रूप से देखा जा सकने वाला, सूर्यास्त की सुनहरी रोशनी में सबसे ऊपर, महान शिला मुख दिखाई दिया, जिसके चारों ओर सफेद धुंध थी, जो अर्नेस्ट की भौंह के आसपास के सफेद बालों की तरह थी। उस पल, अर्नेस्ट के चेहरे पर एक इतनी भव्य अभिव्यक्ति आई कि कवि ने अपनी बांहों को ऊपर किया और चिल्लाया। "देखो! देखो! अर्नेस्ट में स्वयं में महान शिला मुख की समानता है!"

Then all the people looked, and saw that what the poet said was true. The prophecy was fulfilled. But Ernest, having finished what he had to say, took the poet's arm, and walked slowly homeward, still hoping that some wiser and better man than himself would by and by appear, bearing a resemblance to the Great Stone Face.

फिर सभी लोगों ने देखा, और देखा कि कवि ने जो कहा वह सच था। भविष्यवाणी पूरी हुई। लेकिन अर्नेस्ट, ने अपना कथन समाप्त करने के बाद, कवि की बांह पकड़ी, और धीरे-धीरे घर की ओर चला गया, इस उम्मीद के साथ कि उससे कुछ अधिक समझदार और बेहतर आदमी कभी न कभी प्रकट होगा, जिसमें महान शिला मुख जैसी समानता होगी।

NATHANIEL HAWTHORNE

नथानील हाउथॉर्न

(abridged)

(संक्षिप्त)

IWARI  
ACADEMY